परिशिष्ट

साक्षात्कार : श्रीबीरेन

प्रश्न :- आप को कविता लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

उत्तर :- ऐसी कोई खास घटना या कोई खास बात तो नहीं है । किसी चीज़ या किसी घटना को देखकर मन में कई सवाल खड़े हो जाते हैं और वे सवाल कविता की आधारभूमि बन जाते हैं । जैसे मेरी प्रथम कविता "तोल्लुबा शादुगी वाखल" को ही लें । यह एक वास्तविक घटना से प्रेरित है । एक दिन मैंने देखा कि 39 वें राष्ट्रीय राजमार्ग पर , एल. आई. सी. ऑफिस के सामने कङ्लापात् की झाड़ियों में एक स्त्री की लाश पड़ी थी , जिसे लोग घेर कर देख रहे थे । उन दिनों इस तरह की असमान्य मौत नहीं हुआ करती थी । अतः उस तरह की मौत को देखकर मन को बहुत बड़ा धक्का लगा । तभी मुझमें कविता लिखने की भावना अचानक जागी ।

प्रश्न :- क्या आप मानते हैं कि आपकी कविता समाज की यथार्थ स्थिति को चित्रित करने में पूर्णतः सक्षम है ?

उत्तर :- इसका उत्तर स्वयं मेरी रचना देती है ।

प्रश्न :- आपकी प्रारम्भिक कविताओं में अति यथार्थवादी भाषा का प्रयोग अधिकाधिक किया गया है , लेकिन "मपाल नाइदबसिदा ऐ"और "सनागी कैराक" की भाषा अन्य कविताओं की भाषा से अलग है, ऐसा क्यों ?

उत्तर :- मेरी प्रारम्भिक रचनाओं में जीवन के कठोर और नीरस स्वरूप को दिखाया गया है । उन दिनों जीवन बड़े ऊबड़-खाबड़ कटु अनुभवों से पीड़ित था और मेरा मानना था कि कविता आम जनता के दिन-रात की ज़िंदगी के भोगे हुए यथार्थ का चित्र होना चाहिए । हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सुसज्जित आलंकारित भाषा का प्रयोग नहीं करते , बल्कि अश्लील और अपशब्दों का भी प्रयोग

करते हैं । जैसे भूख से तड़पती माँ गोद के बच्चे को दुध न पिला सकने पर ईश्वर की पूजा नहीं करती , बल्कि गाली देती है । लेकिन जब "मपाल नाइदबसिदा ऐ"लिखना शुरू किया , तब मुझे एक भयंकर बीमारी ने अपने कब्जे में करना शुरू किया और मैं जीवन-मृत्यु के बीच झूल रहा था । तब से रोज मृत्यु और उसके बाद के जीवन के बारे में सोचना शुरू किया । इसलिए मेरी कविता की भाषा और शैली में परिवर्तन आया है ।

प्रश्न :- आपका रुझान पाश्चात्य साहित्य की ओर अधिक दिखाई देता है । भारतीय साहित्य ख़ास तौर से हिन्दी साहित्य के बारे में आपकी क्या राय है ?

उत्तर :- यह बात सच है कि मैं पाश्चात्य साहित्य के अधिक निकट हूँ । आरम्भिक जीवन में मैं पाश्चात्य साहित्य के अन्तर्गत अंग्रेजी भाषा में प्राप्त फ्रांस, जर्मनी , इटली, रसिया आदि की भाषाओं के साहित्य बहुत पढ़ा करता था । इनमें से T. S. Eliot , Ezra Pond , Samuel Beckett , Eugene Ionnesco , Franz Kafka आदि के नामों का उल्लेख किया जा सकता है , पर मणिपुरी अनुवाद के अतिरिक्त अन्य भारतीय साहित्य के सम्पर्क में ज्यादा नहीं हूँ । फिर भी अज्ञेय , मोहन राकेश , उपेन्द्रनाथ अश्क , धर्मवीर भारती , जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ बड़े चाव से पढ़ा था । जयशंकर प्रशाद की कामायनी से प्रेरित होकर पृथ्वी की सृष्टि के प्रसंग पर"कैराक" नाटक लिखा था । भारतीय साहित्य में बंगला साहित्य ने मुझे बहुत आकर्षित किया है । मेरी पसंद के बहुत सारे बंगला साहित्यकार हैं , लेकिन प्रमुख रूप से रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रेरित किया ।

प्रश्न :- आपकी कविताओं को पढ़कर यह जान पड़ता है कि आप धर्म को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं । आपके मत में यदि कोई धर्म है तो वह मात्र मानव-धर्म होना चाहिए , लेकिन आप ने वासुदेव , सीता , भीष्म आदि हिन्दू धर्म से सम्बन्धित नामों का प्रयोग किया है और बाद की कविताओं में "हयुम हया सिदबा मपु" आदि का प्रयोग किया है । इस विषय में आप क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर :- मेरी कविताओं की अलग पहचान है । वासुदेव , सीता , भीष्म आदि नामों का प्रयोग मैंने हिंदू धर्म के दृष्टिकोण से नहीं किया है । मानव जीवन के अस्तित्व की परिस्थिति के आधार पर किया है । बाद की कविताओं में "हयुम हया" आदि का प्रयोग मैंने पूर्वजों द्वारा लिखी रचनाओं के अनुकरण पर किया है । मैं यहाँ एक बात का उल्लेख करना चाहूँगा कि आज २० वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में मणिपुरी कविता के स्वरूप में जो " back to native " की भावना आ रही है , वह मेरी 1967 में लिखी रचना " चाफदबा लाइगी येन" में आ चुकी है ।

प्रश्न :- आपकी इधर की कविताओं में मृत्यु , आत्मा आदि की चर्चा अधिक है । क्या आपने सामाजिक समस्याओं से मुँह मोड़ लिया है ?

उत्तर :- कभी कभी लोगों को ऐसा महसूस हुआ होगा कि मैंने समाज से मुँह मोड़ लिया है , लेकिन ऐसी बात नहीं है । जीवन परिवर्तनशील है । मेरे जीवन में भी परिवर्तन आता रहता है । फिर भी मैं मानता हूँ कि समाज से प्राप्त सुख-दुख कुछ क्षणों के लिए हैं । मैं सोचता हूँ कि नचिकेता की तरह आन्तरिक सुख की खोज़ करनी है तो आत्म -ज्ञान की दिशा में प्रवेश करना आवश्यक है । इसलिए मैं भी आत्म-ज्ञान की खोज़ कर रहा हूँ ।

प्रश्न :- आपकी अधिकतर कविताओं में ध्वन्यात्मक शब्दों जैसे कृङ्-कृङ् , पेत्-पेत् आदि की भरमार दिखाई देती है । क्या इसका कोई ख़ास उद्देश्य है ?

उत्तर :- कविता का रूप उसकी विषयवस्तु द्वारा निर्मित होता है । शान्त जीवन शैली से प्रेरित कविता में शान्त भाव होता है , लेकिन शहर की हड़बड़ियों से पूर्ण जीवन द्वारा प्रेरित कविता में हड़बड़ीपन आता है । "तोल्लबा शादुगी वाखल" और मेरी अधिक्तर कविताएँ शहर का अशान्तिपूर्ण चित्र दर्शानेवाली हैं । इसिलिए भीड़-भाड़ जगहों के शोरगुल की ध्वनियों का प्रयोग कविता में किया गया है ।

प्रश्न :- आपकी कविताओं में प्रकृति-चित्रण का प्रायः अभाव है , ऐसा क्यों ?

उत्तर :- आधुनिक जीवन प्रकृति से बहुत दूर होता जा रहा है । बचपन में लम्फेल की सुन्दरता , पहाड़ी टलहटी , नदियों आदि की सुन्दरता देखी जी सकती थी , लेकिन आज का आधुनिक जीवन इन सब सुन्दरताओं से बहुत दूर आ गया है । अतः प्रकृति को चित्रित करनेवाली कविता लिखने का मन नहीं होता । फिरभी आजकल बचपन में देखी प्रकृति की सुन्दरता को याद करके कुछ-कुछ लिखना शुरू कर दिया है ।

प्रश्न :- आप अपनी कविताओं में सफेद फूल का प्रयोग अक्सर करते हैं । क्या आप इससे कोई विशेष सन्देश देना चाहते हैं ?

उत्तर :- कहने का तात्पर्य है अच्छाई, सुन्दरता, सच्चाई ये सब हमेशा अपरिवर्तनशील और अडिग हैं।

प्रश्न :- सुना है कि आप आजकल रोज सुबह गीतांजली पढ़ते हैं , इसके पीछे कौन से कारण है ?

उत्तर :- बस , मुझे अच्छा लगता है ।

प्रश्न :- आप भारतीय साहित्य के निर्माण में रवीन्द्रनाथ की क्या भूमिका मानते हैं ?

उत्तर :- जिस तरह संस्कृत साहित्य ने भारतीय साहित्य को ऊँचा उठाया है , उसी तरह आधुनिक भारत के आधुनिक साहित्य को विश्व साहित्य के समान ऊँचा स्तर प्रदान करने का काम रवीन्द्रनाथ की बहुत बड़ी देन है ।

प्रश्न :- आप एक साहित्यकार होने के साथ-साथ एक शिक्षक भी हैं , लेकिन आपकी कविताओं में आज की शैक्षिक पद्धति के यथार्थ का उल्लेख नहीं मिलता । आज के मणिपुर में प्रचलित शिक्षा और शैक्षिक-स्तर के बारे में आपका क्या विचार है ?

उत्तर :- यह ज़रूरी नहीं है कि जीवन में जो कुछ भी देखा हो उस सबका उल्लेख कविता में हों । मैं अपने पर काव्यात्मक प्रभाव डालनेवाली घटनाओँ को ही लेकर लिखता हूँ । शिक्षक के व्यवसाय के लिए मैं अपने आपको उपयुक्त मानता हूँ , क्योंकि इस व्यवसाय में रहकर मुझे बच्चों को साहित्य के बारे में समझाने और विचार-विश्लेषण करने का अच्छा मौका मिलता है । मेरे विचार में आज की शिक्षा प्रणाली में अध्यात्मिक ज्ञान का अभाव होता जा रहा है । इस दिशा में पुनर्विचार करना उचित होगा ।

प्रश्न :- मणिपुरी दैनिक पत्रिका "पोक्नफम" में ऑटोबायोग्राफी के रूप में "करि करम्बा लीलानो वाहै पीयु इमा वाहै पीयु" शीर्षक कविता हर रविवार को छापी जाती थी । आप के कहेनुसार आजकल इसे गद्य खण्ड के रूप में लिख रहे हैं , तो क्या आप कविता से विमुख हो गये हैं या .....?

उत्तर :- नहीं । "करि करम्बा लीलानो" कविता लिखते समय मुझे लगा कि इसमें कविता के लक्षण ग़ायब हो रहे हैं ; अतः मैं अपनी जीवनी गद्य के रूप में लिख रहा हूँ । जो अंश "पोक्नफम" में प्रकाशित हुए है ; उन्हें अन्य कविकाओं के साथ अलग से छापा जायेगा ।

प्रश्न :- अन्य राज्यों की तुलना में यहाँ के शहर इतने बड़े नहीं है । यहाँ बड़े-बड़े शहरों में मौजूद समस्याएँ नहीं के बराबर हैं , पर आपकी कविताओं को बड़े शहरों का परिवेश प्रायः आ घेरता है , ऐसा क्यों ?

उत्तर :- कभी मैं पढ़ाई के सिलसिले में या अन्य कामों के सिलसिले में इम्फाल के बाहर बड़े शहरों में जाता था , तो वहीं से प्राप्त अनुभवों के आधार पर भी कविताएँ लिखता हूँ । और फिर , यद्यपि इम्फाल बड़ा शहर नहीं है , फिर भी इसमें बड़ा परिवर्तन हो रहा है । वही परिवर्तित स्थिति कई समस्याएँ पैदा करती है जो इम्फाल की समस्या है । अतः मेरी कविता में चित्रित समस्याओं को इम्फाल के नए रूप की और बड़े शहरों की समस्याओं का मिश्रित रूप भी कहा जा सकता है ।

प्रश्न :- जब मणिपुरी भाषा में समकालीन युग की शुरूवात हुई , तो आपने इबोमचा और इबोपिसक के साथ मिलकर क्रुद्ध कविता आन्दोलन प्रारंभ किया , इसकी पृष्ठभूमि क्या थी ?

उत्तर :- हमारी नयी जीवन शैली ही इसकी पृष्ठभूमि है ।

प्रश्न :- क्रुद्ध कविता आन्दोलन की आपकी रचनाओं में भाषा की सारी सीमायें टूट गयी थीं , इसके पीछे आप लोगों की क्या मजबूरियाँ थीं ?

उत्तर :- मैं सोचता हूँ कि कविता वास्तविक जीवन से दूर नहीं होनी चाहिए । मुझे ऐसा कहने में गलती का कोई अहसास नही होता कि हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में प्रयुक्त भाषा कविता की भाषा होनी चाहिए । यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति भाषा के सैद्धान्तिक रूप को परे करके जीवन में प्रयुक्त भाषा-शैली में होनी चाहिए , अन्यथा कविता यथार्थवादी नहीं हो सकती ।

प्रश्न :- समकालीन चेतना के विषय में आपका क्या मत है ? क्या आप मणिपुरी भाषा की कविता के समकालीन चरित्र से सन्तुष्ट हैं ?

उत्तर :- मैं समकालीन जीवी हूँ । जो कुछ भी मैं भोगता हूँ वे समकालीन अनुभव हैं । " I am not out dated " नयी कविता में समकालीन चेतना विद्यमान है । कभी-कभी समकालीन जीवन में प्राप्त मार-पीट से भरपूर अशान्तिपूर्ण वातावरण के चित्रण से ही कविता का रूप न बन सकने के कारण गहराई तक न जाकर सिर्फ ऊपरी सतह तक का चित्रण करने वाली कविता का भी जन्म होता है ।

प्रश्न :- साठोत्तरी कविता में राजनैतिक स्थिति का यथार्थ मुख्य रूप से दर्शाया गया है , मणिपुर के राजनैतिक यथार्थ को आपने अपनी कविता में किस रूप में चित्रित किया है ?

उत्तर :- मैं कविता में प्रत्यक्ष रूप से राजनीति का चित्रण नहीं करता । राजनैतिक परिस्थिति से प्रभावित जीवन और मानसिक स्थिति को चित्रित करने की कोशिश करता हूँ ।

प्रश्न :- क्या आप मानते हैं कि राजनैतिक परिवेश को विषय बना कर कविता रचना कवि की अनिवार्य जिम्मेदारी है ?

उत्तर :- हममें से कोई भी समकालीन राजनैतिक परिवेश से अलग हटकर नहीं रह सकता । फिर भी यह जरूरी नहीं है कि हर कवि तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण करे । लेकिन कविता में राजनैतिक परिस्थितियों से प्रभावित रूप किसी न किसी रूप में विद्यमान होगा ।

प्रश्न :- समकालीन कविता में आम आदमी और उसके जीवन यथार्थ को केन्द्र में रखा जाता है , आपने इस धर्म को किस सीमा तक निभाया है ?

उत्तर :- इसका उत्तर मेरी कविता देगी , मैं नहीं ।

प्रश्न :- प्रारम्भ में आप अति यथार्थवादी थे , किन्तु अब आध्यात्मिकवादी दिखाई देते हैं । क्या आप जैसे कवि के लिए यह जीवन से भागना या पलायनवाद नहीं है ?

उत्तर :- जी हाँ , पहले मैं यथार्थवादी था , लेकिन जैसे जीवन परिवर्तनशील है , वैसे मेरे जीवन में भी समयानुसार परिवर्तन आया है । संसारिक भौतिकता से परे आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश कर मुझे यह जानने की इच्छा हुई कि What is that behind the life . मेरे विचार में आध्यात्मिकता संसारिक भोग से दूर भागना नहीं है । इन्द्रिय भोग , विलास इच्छा से प्रेम पनपता है । इच्छा का भोग कर के आध्यात्मिक प्रेम का जन्म होता है । गीतांजली पृ. -73 पर लिखा यह वाक्य मेरी भी इच्छा है - Deliverance is not for me renuciationon . मेरी दृष्टि में मक्ति वह है ,जो संसार की लीला में भाग लेते-लेते हर इच्छा को प्रेम में परिवर्तित कर एक सफल जीवन की राह दिखाती है । Tagore के अनुसार :- "Yes , all my illusions will burn into illumination of joy , all my desires ripen into fruits of love ".

प्रश्न :- एक जिम्मेदार कवि और एक जिम्मेदार नागरिक में आप क्या समबन्ध मानते हैं ?

उत्तर :- हँसे और कहा - बहुत मुस्किल सवाल है ।

प्रश्न :- हर कवि युग के अनुसार अपनी कविता के लिए नई भाषा की खोज़ करता है , इसमें अनेक समस्याएँ भी आती हैं । आप का क्या अनुभव है ?

उत्तर :- अपनी भावनाओं को , अपने अनुभव को पूरी तरह से अभिव्यक्त कर सकनेवाली भाषा की खोज़ तो करनी पड़ती ही है । हर कला की अभिव्यक्ति एक माध्यम के आधार पर होती है । जैसे नृत्य का आधार अंग भंगिमाएँ होती हैं और संगीत का आधार सुर-ताल होता है , वैसे ही साहित्य की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है । भाषा के द्वारा आँखों देखी चीज़ों या घटनाओं का सही चित्रण करने की कोशिश की जाती है । मेरी प्रारम्भिक कविताओं में जीवन के कठोर और रसहीन स्वरूप को चित्रित करने की कोशिश की गयी है , अतः विषय वस्तु के अनुरूप जो कठोर व तीखे शब्दों का प्रयोग किया गया है , उन्हें अपशब्द या अश्लील नहीं माना जा सकता । जब मेरी कविता आध्यात्मिकता की ओर मुड़ जाती है तो भाषा के रूप में परिवर्तन आना भी स्वाभाविक है । कभी कभी मेरी भावना के अनुरूप शब्द ढूँढ़ ना मुश्किल होता है । आजकल मैं प्राचीन मणिपुरी काव्य और कला में प्रयक्त भाषा चुनकर लिखने की कोशिश कर रहा हूँ । उदाहरण के लिए 'नोङ्पोक् तेङ्था' को लिया जा सकता है ।

प्रश्न :- समकालीन कविता में व्यंग्य का महत्वपूर्ण स्थान है । आपकी कविता में व्यंग्य की क्या भूमिका है ?

उत्तर :- कोई- कोई समालोचक मानते हैं कि मेरी कविताओं में व्यंग्य है , लेकिन मैंने व्यंग्य शैली अपनाने की कोशिश नहीं की है ।

प्रश्न :- आप तुलनात्मक अध्ययन के कौन-कौन से लाभ देखते हैं ?

उत्तर :- यह तो बहुत ही लाभदायक कार्य है । इससे दोनों भाषाओं के स्वरूप को समझ सकते हैं ।

प्रश्न :- आप के अनुसार दो भाषाओं की कविता का तुलनात्मक अध्ययन करते समय किन-किन बातों का अध्ययन करना चाहिए ?

उत्तर :- दोनों भाषाओं की संस्कृति , Statical devolopment (उनकी विकासात्मक गति) व साहित्य आदि के संम्पूर्ण रूप और स्थितियों का ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है ।

प्रश्न :- ग्लोबेलाइजेशन और लिबरेल इकोनॉमी के इस युग में साहित्य की भूमिका पर पुनः विचार किया जाने लगा है । कुछ लोग कहने लगे हैं कि अब साहित्य की भूमिका समाप्त हो गई है और उसका भविष्य सन्देह के घेरे में है । आप की क्या प्रक्रिया है ?

उत्तर :- मुझे ग्लोबेलाइजेशन और लिबरेल इकोनॉमी की अधिक जानकारी नहीं है , लेकिन मैं नहीं मानता कि साहित्य की भूमिका ख़त्म हो रही है और इसका भविष्य अंधेरे में है ।

प्रश्न :- विश्व में जो नई बाज़ार व्यवस्था उभरी है , उसने सभी भाषाओं को प्रभावित किया है । क्या आपको लगता है कि धीरे-धीरे अधिक्तर भाषाएँ मर जाएँगी और केवल एक या दो भाषाएँ ही दुनिया के लिए बचेंगी ?

उत्तर :- मैं बाजार व्यवस्था के बारे में अधिक नहीं जानता । फिर भी मैं नहीं मानता कि भाषाएँ मर जायेंगी , बल्कि आज अपनी-अपनी भाषाएँ और संस्कृति के पुनरुत्थान की लहर उठना शुरू हो गयी है । मणिपुरी भाषा और साहित्य की उन्नति तथा मणिपुरी लिपि को पुनर्जीवित करने का काम भी जोर शोर से शुरू हो गया है ।

प्रश्न :- आप कविताओं के साथ-साथ एब्सर्ड नाटक और कहानियाँ भी लिखते हैं ?

उत्तर :- हाँ , मैं नाटक भी लिखता हूँ । लोग मेरे नाटक को एब्सर्ड नाटक मानते हैं । लेकिन मेरी दृष्टि में dramatized poetic vision है । मैं अपने poetic vision को नाटक के रूप में प्रस्तुत करता हूँ । Basically I am a poet .

प्रश्न :- नाटक लिखते समय आपने एब्सर्ड शैली को क्यों अपनाया ?

उत्तर :- यह तो संयोग की बात है । समालोचना के अलावा मुझे जो कुछ भी लिखने का मन होता है, सब कविता के रूप में देखता हूँ और एब्सर्ड नाटक काव्यात्मक दृष्टिकोण को विषयवस्तु बनाकर लिखा जाता है । जैसे Waiting for Godot और Enek के Chear's को देखें । दोनों ही में काव्यात्मक दृष्टिकोण को दिखाया गया है । इसमें न ही किसी समाजिक समस्या को उठाया गया है और न ही किसी एक पात्र के चरित्रगत विकास को चित्रित किया गया है , मात्र एक विशेष मानसिक परिस्थिति को दर्शाया गया है । मेरे नाटकों में भी मानसिक स्थिति को प्रस्तुत किया गया है । वैसे तो मैं एब्सर्ड नाटक बहुत पढ़ता हूँ , लेकिन मेरे नाटकों के भाव व कथावस्तु मेरे अपने हैं ।

प्रश्न :- आपने अपने नाटकों में आदमी के जिस अजनबीपन और अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया है , क्या यह सब मणिपुर में आपके चारों ओर मौजूद है ?

उत्तर :- अन्तर्द्वन्द्व तो हमेशा होता रहता है । मन की आन्तरिक और बाह्य स्थिति में हमेशा द्वन्द्व होता रहता है , क्योंकि हम सांसारिक जीव हैं ।

प्रश्न :- आप अपनी कहानी में भी समाज के अति यथार्थ को चित्रण करने के प्रति आग्रहशील हैं । क्या इसके पीछे व्यक्तिगत अनुभव काम करते हैं ?

उत्तर :- मैं दो ढंगों से लिखता हूँ । एक अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर और दूसरे देखी हुई घटनाओं के आधार पर । पुनर्निर्माण भी होता है लेकिन मात्र कल्पना को आधार बनाकर नहीं लिखता ।

प्रश्न :- हाल ही में आपको अपने कविता संग्रह 'सनागी कैराक' के लिए ' भारतीय भाषा परिषद , कोलकाता' द्वारा सन् 2007 का 'राष्ट्रीय साहित्यिक पुरस्कार' प्रदान किया गया है । आप खुद यह पुरस्कार लेने कोलकाता गए थे । उस अवसर के अपने अनुभव सुनाइए ।

उत्तर :- वहाँ कलकत्ता में देखा कि साहित्यकारों को कितना सम्मान दिया जाता है । बहुत अच्छा लगा उन लोगों के प्यार व सत्कार को देखकर । संयोजकों का स्वभाव भी बहुत अच्छा था । वहाँ मैंने जीवन का एक सुखानुभव पाया । कलकत्ता के उच्च शिक्षित बुद्धिजीवियों के सामने भाषण देते वक्त मुझे डर भी लगा था और बड़ा आनन्द भी हो रहा था । भारत के विभिन्न प्रसिद्ध साहित्यकारों से मिलकर बातें करने का जो मौका मिला , बहुत अच्छा लगा । कन्नड़ भाषा के पद्मभूषण डॉ. यू. आर. अनन्तमूर्ति , बाँगला साहित्यकार श्रीमती माहश्वेता देवी , ओड़िया भाषा के डॉ. सीताकांत महापात्र आदि , विशेष रूप से सीताकांत और अनन्तमूर्ति के साथ बातचीत करने का जो मौका मिला , वो मुझे बहुत अच्छा लगा । मलयालम भाषा के पुरस्कार प्राप्त उपन्यासकार , गुजराती साहित्य के समालोचक आदि से भी मिलकर बातें करने का मौका मिला ।

प्रश्न :- मणिपुरी साहित्य में आप अपने को कहाँ खड़ा मानते हैं ?

उत्तर :- यह तो पाठकों के निर्णय का विषय है ।

प्रश्न :- नये मणिपुरी साहित्यकारों में आपको प्रभावित करनेवाले कौन-कौन हैं ?

उत्तर :- कई हैं । जीवन को गहराई से देखनेवाले सभी साहित्यकार मुझे पसन्द हैं ।

प्रश्न :- नये लेखकों के लिए आपका कोई सन्देश ?

उत्तर :- साहित्य की सुन्दरता और साहित्य द्धारा दिये जानेवाला आनन्द हमेशा के लिए हैं । समय के ताकतवर वार से भी नष्ट न हो सकनेवाली चीज़ है । इसीलिए वर्षो पहले लिखे गये शैक्सपीयर के नाटक तथा महाभारत-रामायण आदि ग्रन्थों की सुन्दरता और इनसे मिलनेवाले रसानन्द में ज़रा सी भी कमी नहीं आई है । आज तक इन ग्रन्थों का अमरत्व गुण इसीलिए नहीं खोया है , क्योंकि इन ग्रन्थों ने मानव जीवन के उस सात्विक रूप को प्रस्तुत किया है , जो समय की सीमा से परे है । ठीक वैसे ही प्राचीन मणिपुरी साहित्य - हिजन हिराओ , खम्बा-थोइबी - आदि का भी महत्व है । मैं चाहता हूँ कि जाति के भविष्य की सम्पत्ति साबित कर सकने वाले और इस जाति की पहचान बनाये रखने वाले साहित्य की रचना करें ।

इबेहाइबी

(वाइखोम चनु इबेहाइबी)